Dr. Arun Kumar Ray
Asst. Professor
Dept. of Psychology
U.R. College Rosera Samastipur
Paper – MJC-(VII) 2023-2027
Semester – IV th
Mob – 7061956103
Date – 04/11/2025

TOPIC
Structuralism

SUB-TOPIC

* विल्हेल्म वुण्ट का योगदान (contribution of wilhelm wundt)

"जर्मनी में आधुनिक मनोविज्ञान के विकास में वुण्ट (Wundt) का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वुण्ट ने विश्व की सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की और मनोवैज्ञानिक प्रयोगों को प्रोत्साहन दिया। वुण्ट ने स्वयं भी बहुत से प्रयोग किये, जो कि सभी प्रयोग वैज्ञानिक थे।

* विल्हेल्म वुण्ट (wilhelm wundt) :- का जन्म रेकारन नामक स्थान में 6 जून 1832 ई० में हुआ। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा एक पादरी की देख-रेख में हुई। बाद में उसने हेडिलबर्ग विश्वविद्यालय में औषधिशास्त्र का अध्ययन किया।

* सन 1856 में वह बर्लिन चला गया और वहाँ शरीर-विज्ञान का और अधिक अध्ययन किया। यही पर वुण्ट ने मुलर की देख रेख में शरीर-विज्ञान का विस्तृत और प्रयोगात्मक अध्ययन किया।

* इसी माध्यम के द्वारा वुण्ट ने मुलर से बहुत कुछ सीखा।

The execution of laws is more important than the making of them.

Scanned with CamScanner

JANUARY 2020
M T W T F S S
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31

* शायद प्रारम्भिक जीवन के इन्हीं लक्षणों ने वुण्ट को महान वुण्ट बना दिया — न हँसनेवाला, न थकनेवाला, अनवरत काम करनेवाला, अपने मार्ग पर अडिग, अपने लक्ष्य में निश्चित और किसी आँधी-तूफान से न घबरानेवाला। और शीघ्र ही ज्ञानोपार्जन में ऐसे लीन हुए कि लोगों ने उनको लोहा मान लिया।

* सन् 1857 में वुण्ट ने हैडलबर्ग विश्वविद्यालय में लेक्चर देना स्वीकार कर लिया और सात वर्ष तक इसी पद पर रहा। इसी बीच उसने शरीर-विज्ञान से सम्बन्धित एक पुस्तक लिखी।

* तथा सन् 1864 ई० में वुण्ट सहायक प्रोफेसर नियुक्त हुआ। और 1871 में उसे हेल्महोल्ज का सहायक बनने का अवसर प्राप्त हुआ।

* संरचनावाद में वुण्ट एवं टिचेनर का योगदान (structuralism in contribution of wundt and Titchener)

वुण्ट ने संरचनावादी मनोविज्ञान की स्थापना करके कितना बड़ा काम किया, इस पर टिप्पणी वोलमैन (wolman 1960) और मर्फी (Murphy, 1961) के विचारों के उदाहरण के साथ हो चुकी है।

अन्तिम रूप से संरचनावाद ने यह मान लिया कि चेतना (consciousness) एक विद्यमान वास्तविकता (existent reality) है।

Always wear the costume of humility and you will receive the love and co-operation of others

* अपनी अन्तिम पुस्तक में टिचनर इस विश्वास पर आ गये थे कि मनोविज्ञान को केवल संवेदी विषयों (sensory materials) पर ही विचार करना है। आरम्भ में संरचनावादी चेतना को रचने वाले तत्वों की खोज कर रहे थे और उन तत्वों को जोड़ने वाली शक्तियों की भी। जब टिचनर ने मात्र संवेदन को चेतना का रचयिता मान लिया तो तत्व की खोज भी समाप्त हो गयी और किसी सम्बन्धन नियम की भी आवश्यकता नहीं रही।

* परिणामस्वरूप संरचनावाद एक विचित्र स्थिति में फंस गया। चेतना को केवल संवेदन से रचित मान लेने के कारण न विश्लेषण (analysis) की आवश्यकता रह गयी और न सम्बन्धन (association) की जबकि ये दोनों बातें मौलिक संरचनावाद की मूल बातें थीं।

* संरचनावाद के निधन के बावजूद इसकी कुछ बातें तो आज भी मनोविज्ञान में ही नहीं बल्कि सभी विज्ञानों में बनी हुई है। संरचनावाद पर सबसे कठोर प्रहार अन्तर्निरीक्षण को लेकर हुआ। अन्तर्निरीक्षण अनुभव का दावा देने वाली विधि जो आज भी मनोविज्ञान और अन्य विज्ञानों में कुछ हल्के रूप में प्रयुक्त है।

* चैपलिन ने 1979 ने लिखा कि एक आन्दोलन के रूप में संरचनावाद ने मन के अध्ययन में विज्ञान लाया और

Scanned with CamScanner